नूरजहाँ

डॉ संध्या कुमारी

1622 ई० के बाद जहाँगीर का स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। अतः नूरजहाँ का प्रभाव साम्राज्य पर अधिक बढ़ गया था। फिर भी नूरजहाँ हर बिन्दू की सूचना जहाँगीर को देती थी। अपने पति की सेवा एवं स्वास्थ्य पर काफी ध्यान देती थी। यह नूरजहाँ का ही प्रभाव था कि बादशाह नशापान में कमी लाये। गरीब एवं निःसहाय को उसने काफी मदद की। कला के विभिन्न विधाओ को पूर्ण संरक्षण प्रदान की।

शासन पर नूरजहाँ के प्रभाव ने कुछ घातक परिणाम दिये। प्रभुता प्राप्ति के पश्चात् उसके दल के जो विरोधी थे उन्हे दरकिनार करने में भी नहीं चुकी। फलतः महत्वपूर्ण कतिपय अधिकारी साम्राज्य के प्रति उदासीन हो गये। महावत खाँ ने विद्रोह तक कर दिया। महिला होने के वजह से सम्पूर्ण साम्राज्य पर नियंत्रण रखने में दिक्कत होती थी।

जहाँगीर अस्वस्थ होकर 1627 ई० मे चल बसा और सत्ता संघर्ष शाहजहाँ और नूरजहाँ के बीच चली। जिसमें नूरजहाँ असफल रही। उसने जहाँगीर की याद में एक मकबरा बनवाया और पेंशन प्राप्त कर शेष जीवन शांति पूर्वक व्यतीत करती हुई 1645 ई0 को इस धराधाम से चल बसी। वस्तुतः मध्यकालीन भारतीय इतिहास की वह एक अद्वितीय महिला थी।